

पशुओं में लम्पी त्वचा रोग: लक्षण, रोकथाम एवं नियंत्रण



डॉ. रोहिताश कुमार¹
डॉ. खवले आशुतोष विजय²

¹सहायक आचार्य
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
प्रसार शिक्षा विभाग
एम.जे.एफ. कॉलेज ऑफ
वेटेरिनरी एंड एनिमल साइंसेज
चोमू, जयपुर (राजस्थान)
²सहायक प्राध्यापक
पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी प्रभाग
एम.जे.एफ. कॉलेज ऑफ
वेटेरिनरी एंड एनिमल साइंसेज
चोमू, जयपुर (राजस्थान)

*अनुरूपी लेखक

डॉ. रोहिताश कुमार *

परिचय



लम्पी त्वचा रोग क्या है?

लम्पी त्वचा रोग / ढेलेदार त्वचा रोग मवेशियों का एक विषाणुजनित रोग है। मूल रूप से यह अफ्रीका में पाया जाता था, लेकिन अब यह भारत सहित दुनिया के कई देशों में भी फैल गया है। यह रोग पॉक्स समूह के विषाणु द्वारा होता है। पशु स्वास्थ्य के लिए विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को अधिसूचित किया है। यह विषाणु पशुओं की खाल पर संक्रमण फैलाता है। कीट-पतंगे इसके लिए रोगवाहक के रूप में काम करते हैं, जो इस बीमारी को एक पशु से दूसरे में फैला देते हैं। मानव में अभी तक लम्पी विषाणु का संक्रमण नहीं देखा गया है।

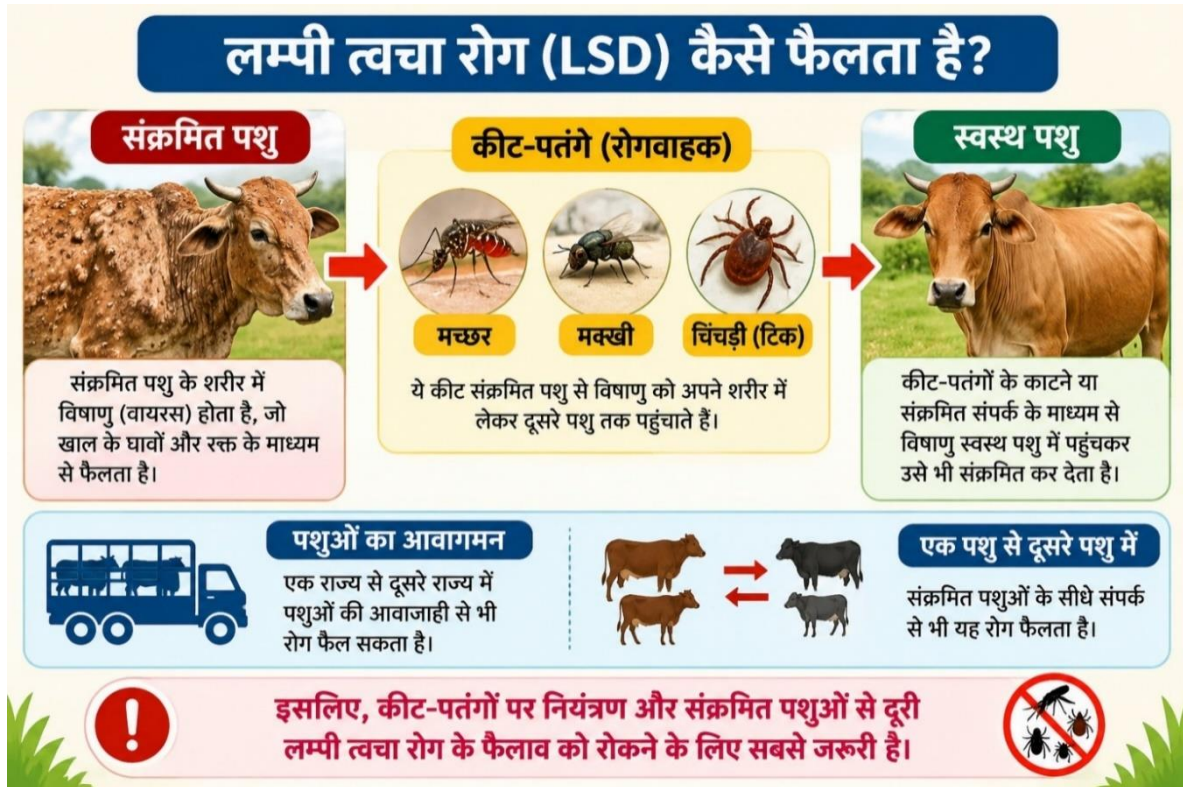
लम्पी त्वचा रोग के लक्षण

- इस रोग से पीड़ित पशुओं में तेज बुखार 105–107 डिग्री फारेनहाइट तक आता है।
- पशुओं की खाल में 2–5 सेंटीमीटर व्यास की गांठें बन जाती हैं, विशेष रूप से सिर, गर्दन, अंगों, थन और जननांगों के आसपास।
- बाद में इन गांठों में पस पड़ जाता है और घाव अंत में खुजली वाली पपड़ी में बदल जाते हैं, जिस पर विषाणु महीनों तक बना रह सकता है।
- लसीका ग्रंथियों में सूजन, अत्यधिक लार आना और आँख आना भी इसके लक्षण हैं।

- विदेशी नस्लों जैसे जर्सी तथा देशी नस्लों की तुलना में कुछ पशु इस बीमारी की अधिक चपेट में आ सकते हैं।
- भैंस अपेक्षाकृत कम प्रभावित होती हैं।
- प्रजनन के लिए उपयोग की जाने वाली गायों में गर्भपात के साथ-साथ स्थायी बाँझपन भी हो सकता है।

लम्पी त्वचा रोग एक पशु से दूसरे में कैसे फैलता है?

- यह विषाणु संक्रमित पशु से दूसरे पशुओं में फैलता है।
- कीट-पतंगों के माध्यम से यह बीमारी फैल सकती है।
- पशुओं के एक राज्य से दूसरे राज्य में आने-जाने से भी बीमारी एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैल सकती है।



लम्पी संक्रमण का उपचार

- अभी तक इस बीमारी के लिए कोई विशेष इलाज उपलब्ध नहीं है। टीकाकरण रोकथाम का प्रभावी तरीका है।
- बीमारी फैलने पर संक्रमित पशुओं को अलग रखने की सलाह दी जाती है।
- तेजी से ठीक होने के लिए एंटीबायोटिक दवा तथा लक्षणों के आधार पर उपचार किया जा सकता है।

- भारत में इस वायरस के लिए पशुओं को कैप्रिपॉक्स का टीका दिया जा रहा है।
- स्वदेशी टीका लम्पी प्रो-वैक-इंड भी लम्पी स्किन रोग के खिलाफ विकसित किया गया है।
- पशुओं में लम्पी त्वचा रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय से संपर्क करें।

लम्पी त्वचा रोग का नियंत्रण

- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- पशुशाला में या आसपास किसी पशु में संक्रमण की जानकारी मिलने पर स्वस्थ पशुओं को संक्रमित पशुओं से अलग रखें।
- रोग के लक्षण दिखने वाले पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए।
- पशुओं को मेले, मंडी और अन्य सामूहिक स्थानों पर नहीं ले जाना चाहिए।
- पशुशाला में मच्छर, मक्खी, पिस्सू और चिंचड़ी (टिक) की संख्या को नियंत्रित करने के उचित उपाय करने चाहिए।
- रोगी पशुओं की जाँच और इलाज में उपयोग किए गए सामान को खुले में नहीं फेंकना चाहिए।
- पशुशाला या आसपास किसी असामान्य लक्षण वाले पशु को देखने पर नजदीकी पशु अस्पताल को इसकी जानकारी देनी चाहिए।

- एक पशुशाला के श्रमिक को दूसरी पशुशाला में नहीं जाना चाहिए। पशुपालकों को भी अपने शरीर की साफ-सफाई पर ध्यान देना चाहिए।
- संक्रमित गायों द्वारा उत्पादित दूध को उपभोग से पहले पाश्चुरीकृत किया जाना चाहिए।

लम्पी त्वचा रोग से मरने वाले मवेशियों का निपटान

- यदि लम्पी त्वचा रोग से संक्रमित पशु की मृत्यु हो जाती है, तो उसके मृत शरीर का सही तरीके से निपटान करना चाहिए ताकि बीमारी आगे न फैले।
- पशु की मृत्यु के बाद उसे जमीन में दफना देना चाहिए।
- यदि कोई पशु लंबे समय तक लम्पी त्वचा रोग से ग्रस्त रहने के बाद मर जाता है, तो उसे दूर ले जाकर गड्ढे में दबा देना चाहिए।